Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 3 | MARCH 2023

गणगौर एवं तीज के त्योहार पर महिलाओं की भूमिका (जयपुर जिलें के विशेष संदर्भ में)

डॉ. नीलम मीना [1]

[1] पीडोएफ शोधार्थी, आईसीएसएसआर नई दिल्ली इतिहास विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर.

ABSTRACT:

KEYWORDS:

अनादिकाल से भारतीय संस्कृति व समाज एक–दूसरे के पूरक रहे हैं। जहाँ व्यक्ति को समाज की इकाई माना वहीं उसका सर्वांगीण विकास संस्कृति द्वारा सम्भव हो सका। ये संस्कृति ही है जो व्यक्ति को समाज से व समाज को व्यक्ति से जोड़कर रखती है। संस्कृति के बिना व्यक्ति का विकास असम्भव है– "संस्कृति के दो रूप है। एक बाह्य और दूसरा आंतरिक। वहीं संस्कृति के अन्य दो रूप भी माने गए हैं– एक शिष्ट और दूसरा लोक संस्कृति। लोक संस्कृति मूलाधार है और शिष्ट संस्कृति की सहायता करती है। समस्त भारत की संस्कृति का आधार साधारण जनता है जो गाँवों, जंगलों, पर्वतों में बसती है। अपने समाज में नगरीय संस्कृति और ग्रामीण संस्कृति दो पृथक संस्कृतियों का समावेश हो जाता है।"1

यदि संस्कृति की बात हो रही है तो सामाजिक व सांस्कृतिक परिदृश्य में राजस्थान समूचे भारत में अग्रणी व अलग स्थान रखता है– "राजस्थान की रंग–बिरंगी संस्कृति में मेलों, त्योहारों और उत्सवों का अपना महत्व है। यहाँ विभिन्न स्थानों पर पूरे वर्ष त्योहारों और समारोहों के आयोजन की परम्परा रही है। ये सभी समारोह गीत–संगीत, आनन्द और उत्साह के माहौल में मनाए जाते है।"2 पुरातन समय से ही राजस्थान की सभ्यता–संस्कृति विकसित हो इतिहास के पृष्ठों पर अंकित होती रही है। राजस्थान राज्य अस्तित्व में आने से पूर्व समस्त रियासतों, ठिकानों व प्रांतों में बंटा हुआ था "भारत केउत्तर–पश्चिमी भू–भाग में स्थित राजपूत रियासतों को उन्नीसवी सदी के पूर्वार्द्ध से ही राजनतिक एजेन्ट कर्नल टॉड ने 'रायथान' या 'राजस्थान' नाम दिया। तत्पश्चात् इन रियासतों को एक सूत्र में 'राजस्थान' नाम देकर लार्ड हैस्टीकन ने मेवाड़, बूंदी, किशनगढ़, बीकानेर, जयपुर, बाँसवाड़ा, डूँगरपुर और जैसलमेर पर अपना प्रभाव कायम किया। स्वतंत्र भारत में 30 मार्च, 1949 ई. से इन सभी रियासतों के गठन को राजस्थान प्रदेश से सम्बोधित किया गया।"3एकीकरण से पूर्व प्रदेश को क्षेत्र विशेष तथा राजवंशों के अलग–अलग नामों से पुकारा जाता रहा था। राजस्थान मारवाड़, मेवाड़, ढूंढाड़ तथा हाड़ौती क्षेत्र के नाम से पुकारा जाता रहा था।

सर्वविदित है कि प्रदेश में अंग्रेजों के आगमन होने के पश्चात् 18वीं सदी से ही राजपूत रियासतों में बदलाव होना प्रारम्भ हो चुका था। राजस्थान के शासकों के सम्बन्ध विदेशी शासकों से स्वार्थ पूरित बढ़ते जा रहे थे जिससे तत्कालीन राजस्थान की कला व संस्कृति पर जो प्रभाव विकसित हुआ उसके अनुरूप प्रदेश के सभी क्षेत्रों के लोक सांस्कृतिक परिवेश में परिवर्तन दिखाई देने लगा था–"इन्हीं संदर्भों में बीसवीं सदी में जहाँ एक ओर देश में सामाजिक परिवेश, भौगोलिक परिस्थितियाँ, रीतिरिवाजों तथा सामाजिक मूल्यों को दिशा में विभिन्न मोड़ आते गए, कलाकार में भी सामाजिक परिवर्तनों अनुसार स्वयं की अभिव्यक्ति के अनुरूप मौलिक प्रेरणा विकसित करने की तत्परता बढ़ी।"4राजस्थान एक जीवंत प्रदेश है जहाँ भूगोल एवं इतिहास संस्कृति में एकाकार हो जाते हैं। राजस्थान राज्य की यह विशेषता है कि इसके हर क्षेत्र का अपना एक अलग इतिहास व संस्कृति है।

राजस्थान बनने से पूर्व यह राज्य जिन रियासतों में बंटा हुआ था इन रियासतों के तत्कालीन शासकों की शिल्पकला, मेले और त्योहारों में विशेष रूचि रही। इसी से प्रेरित होकर प्राचीनकाल से न केवल विदेशी यात्री बल्कि बड़ी संख्या में अन्य प्रदेश के आमजन भी पर्यटकों के रूप मे यहाँ आते रहे हैं। साथ ही यहाँ ग्रामीण त्योहारों, परम्पराओं, तीर्थ स्थानों और लोक देवी–देवताओं के प्रभाव स्वरूप लाखों की संख्या में धार्मिक श्रृद्धालुओं का आगमन होता रहा है।

राजस्थान की सभ्यता व संस्कृति में अविच्छिन्नता इस प्रकार दृढ़ एवं सक्रिय दिखाई देती है कि हमें राजस्थान की विशेषताएँ कहीं और दिखाई नहीं देती। यहाँ की सभ्यता–संस्कृति सदियों से सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन के विविध पहलुओं में अस्थिरता का समावेश भी नहीं होने देती। यही कारण है कि समाज में सदियों से चली आ रही परम्पराओं को लोगों ने आज भी संजोयें रखा है। राजस्थान् के लोगों ने आज भी अपनी भाषा, वेशभूषा, रहन–सहन, सभ्यता–संस्कृति के प्रति सकारात्मक विचारों को सचेतन रूप से अपनाए हुए हैं, वहींवे अपनी परम्परागत छवि को भी युग–युगान्तर से धरोहर रूप में बनाए रखा है। पूर्वी राजस्थान की बात की जाए तो यहाँ का सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश अपने आप में विशिष्टता लिए हुए है। पूर्वी राजस्थान के मानववादी मानदण्ड से यहाँ की सभ्यता–संस्कृति का अंकन किया जाए तो वह यहाँ पर मनाए जान वाले त्योहार व मेलों के आधार पर व्यापकता लिए हुए है जिसमें भी महिलाओं की भूमिका अधिक परिलक्षित होती है। आज हर क्षेत्र में महिलाओं ने प्रगति करते हुए उत्तरोत्तर अपना स्थान मजबूत बनाया है। परम्परागत रूप में देखे तो सदियों से महिलाएँ ही सामाजिक एवं सास्कृतिक मान–मर्यादाओं, तीज–त्योहारों तथा उत्सवों व अनगिनत कार्यों का निर्वाह समय पर पूरी लगन व श्रद्धा के साथ ईमानदारी से करती आई है। शहर की अपेक्षा गाँवों की स्त्रियाँ अधिक सामाजिक व संस्कृति के नजदीक रही है। शहरी महिलाओं की जीवन शैली में आधुनिकता का समावेश अधिक देखने का मिलता है जिससे वे सामाजिक व संस्कृति के घोतक कह जाने वाले त्योहार, मेलों, पर्वों की ओर अधिक ध्यान नही दे पाती। यद्यपि ऐसा नहीं है कि शहरी महिलाएँ अपने तीज–त्योहार मनाती नहीं है किन्तु उनमें वह आत्मीयता, संतोष, उत्साह, उमंग ग्रामीण महिलाओं की अपेक्षा कम ही देखने को मिलता है। गाँव में महिलाएँ जो त्योहार हिन्दी माह के हिसाब से आने वाला होता है उसका रोमांच आने से पूर्व ही ग्रामीण महिलाओं में अधिक देखने का मिलता है। कारण है कि गाँवों में शहरों की अपेक्षा साम्प्रदायिकसौहार्द्ध की भावना, अपनापन अधिक परिलक्षित होता है।

पूर्वी राजस्थान में जयपुर जिले में सभ्यता और संस्कृति को बनाए हुए परम्परागत मेले और त्यौहार ऐसे है जिन्होंने ढुंढाड़ प्रदेश को देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी पहचान दिलाई है। जयपुर में लोग अपने परम्परागत तीज–त्योहारों को मनाते हुए जनमानस पर गहरी व अमिट छाप छोड़ते देखे जा सकते हैं। सतरंगी जयपुर में सदियाँ गुजर जाने के बाद भी यहाँ पर आयोजित होने वाले मेलों व त्यौहार को मनाने का उत्साह जनआस्था का स्थल तो बना हुआ है ही वहीं यहाँ इन पर्वो–त्यौहारोंमे शामिल होने वाले व्यक्तियों को अपनी सांस्कृतिक सूत्रमाला में भी बाँध कर रखते हैं। जयपुर क्षेत्र के परम्परागत पर्वो–त्योहारों का हिस्सा बने लोग चाहे कहीं भी किसी भी क्षेत्र का हो, वह बार–बार उसी समय यहाँ आने को विवश हो जाता है खासकर महिला वर्ग। जयपुर की ग्रामीण व शहरी महिलाएँ अपने परम्परागत परिधानों व आभूषणों को धारण कर, निकेतन को सजा–धजा कर असीम उत्साह से जब तीज–त्योहारों का स्वागत करती है तो यह प्राकृतिक छवि देखते ही बनती है। हालांकि पूर्व की भाँति यहाँ मनाए जाने वाले त्योहारों में विकृति अवश्य आई है। इस कारण पाश्चात्य व आधुनिक मानसिकता, परम्परात जीवन शैली में बदलाव, दिखावटीपन, कोरोना का प्रकोप, व्यक्तिगत उदासीनता जैसे अनगिनत कारण हो गए हैं किन्तु फिर भी शहरी महिलाओं की अपेक्षा ग्रामीण महिलाएँ अपने तीज–त्योहारों को अधिक उमंग–उल्लास के साथ मनाती है।

जयपुर की ग्रामीण महिलाओं के मेले प्राणतत्व माने जाते रहे हैं। प्रत्येक परम्परागत त्योहारों को मनाने हेतु जहाँ ग्रामीण महिलाएँ अपने हाथ की अँगुलियों पर हिन्दी माह को रटकर रखती है वही अधिकांशतः शहरी महिलाएँ कैलेन्डर में अंग्रेजी माह को देखकर

त्योहार का ध्यान रखती है। खैर आधुनिकता भरी जिन्दगी में शहरी स्तर पर यह होना स्वाभाविक है। महिलाओ के त्योहार तीज पर्व से शुरू होकर गणगौर पर्व तक पूरे साल माह के अनुसार चलते रहते हैं। राजस्थान के त्योहारों के सम्बन्ध मे इतिहासकार जैन व मालो लिखते है कि– "गणगौर, श्रावणी तीज, होली, अक्षय तृतीया, रक्षाबंधन, दशहरा, दीपावली आदि धार्मिक पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाए जाते थे। इनमें से गणगौर, तीज, दशहरा पर्व राज्य की ओर से आयोजित थे जिनमें सभी वर्गों और धर्मों के लोग भाग लेते थे।"5गामीण यहाँ व शहरी महिलाएँ किस शैली में तीज व गणगौर के त्योहार को मनाती है। उसी का यहाँ आंशिक अध्ययन किया गया है।

तीज–राजस्थान में तीज का त्योहार केवल जयपुर क्षेत्र में ही सदियों से मनाया जाता रहा है। जयपुर की तीज की सवारी विश्व प्रसिद्ध है। "राजस्थान का तीज का त्योहार सम्पूर्ण भारत में प्रसिद्ध है। तीज का त्योहार ऋतु प्रधान होते हुए भी भावुकता से अधिक सम्बन्धित है। वर्षा ऋतु के महिनों में जब बरसात की रिमझिम और चारों ओर छाई हरियाली अपने सौन्दर्य से भरी छटा पावस धरती को महका देती है, तब इस छटा का उल्लास तीज के त्योहार के रूप में दिखाई देता है।"6कहा भी जाता है कि तीज त्योहारा बावड़ी अर्थात जब प्रदेश हरियाली की सघन चादर ओढ़े रहता है। प्रकृति चारों ओर से हरी–भरी, बहते नदी–नालो से युक्त दिखाई देती है। श्रावण मे वर्षा ऋतु होने की वजह से सरोवर लबालब होते है तब श्रावण की शुक्ल तृतीया को विवाहित व अविवाहित कन्याएँ तीज का त्योहार मनाती है। इस दिन विवाह के पश्चात् प्रथम वर्ष की तीज पर लड़की केससुराल से सिंजारा आता है। उसमें लड़की के लिए नए परिधान, आभूषण, मिठाईयाँ, फल आदि होते हैं। लड़की उन्ही कपड़ों व आभूषणों को धारण कर अपनी सखी–सहेलियों के संग तीज का त्योहार मनाने हेतु बागो में, नदी के किनारे, खुले मैदान जहा आस–पास कोई तालाब, बहता झरना हो, वहाँ जाती है। कहते है कि तीज पर वर्षा का होना जरूरी होता है। शहरों में महिलाएँ व विवाहित–अविवाहित लड़कियाँ लहरियां पहन कर आस–पास के बाग या उद्यान मे जाकर झूला झूलती है, मिठाई–फल आदि खाती है। व्रत कथा सुनती है। वर्षा का आनन्द लेते हुए अपना दिन पूरा करती है। वहीं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएँ व लड़कियाँ सिंजारे में आये हुए कपड़े, गहने पहनकर सजती–संवरती है। बड़े–बूढ़ों का आर्शीवाद लेती है। अपनी सखियों को बुलाती है। रात को भिगोए चने व मूंग को बर्तन में डालकर उसके साथ रोटी, गुड, घेवर, रक्षासूत्र, पानी, कुमकुम लेकर मैदानी क्षेत्र जहाँ नदी बहती हो या आस–पास तालाब हो या पानी का कोई स्त्रोत हो– वहाँ जाकर सर्वप्रथम सभी विवाहित व कुँवारी लड़कियाँ व महिलाएँ झाडी या बबूल के पेड़ पर जिस पर काँटे हो, उन काँटों में आठ चने के तथा आठ मूँग/मोठ के दाने पिरोती है। ये सोलह श्रृंगार व सुहाग के प्रतीक माने जाते हैं। घेवर से उस झाड़ी/पेड़ का मुँह मीठा करवाती है तथा रक्षा डोर बाँधती है। उसे पानी पिलाती है और अन्त में कुमकुम से टीका लगाकर हाथ जोड़कर वर्षा ऋतु में अमर सुहाग का वरदान माँगती है। फिर वहीं बैठकर रोटी, घेवर, चने–मूंग–मोठ खाती है, पानी पीती है। बचे हुए मूंग–मोठ बहते पानी में बहा देती है। जब गाँवो में रंग–बिरंगे कपड़ों में महिलाएँ व लड़कियाँ एक जगह खुले मैदान में बहते पानी के पास, वर्षा की झमाझम के बीच दिखाई देती है तो प्राकृतिक वातावरण इतना मनोरम व देखने वाला होता है कि नजर नहीं हटती। यह जमघट प्राकृतिक सुषमा ओढ़े सतरंगी मेले से कम नहीं दिखाई पड़ता। इसी संदर्भ में विभूति सचदेव लिखते है कि–"Women are to full of desire in the rainy season that the idea of separation from one's lover during Teej is often used by poets to describe something quite unbearable as the medieval poet Govinda of Shravana."7इसके साथ ही हरियाली की सुषमा में आनन्द विभोर होकर ग्रामीण महिलाऐं व लड़कियाँ परम्परागत गीत भी गाती है यथा–

"हरण्यां मन हरियालियां,
डर हालियां उमंग
तीज परब, रंग त्यारियां,
सावण ल्यायों संग।"8

श्रृंगारिक त्योहार के नाम से प्रसिद्ध तीज राजस्थान की सभी महिलाओं का प्रिय त्योहार माना जाता है। 'तीज की सवारी, पिया घणी लागे प्यारी" वाली धारणा प्रत्येक महिला के मन में समायी हुई रहती है। तीज का त्योहार हर जगह धूमधाम से मनाया जाता है। शुष्क स्थान जहाँ वर्षा कम होती है या ना के बराबर तो वहाँ के निवासी काली घटा को तीज के त्योहार पर देख लेते हैं तो उसे कजली तीज का नामदेते है। कजली तीज राजस्थान में विशेषतः बूंदी की प्रसिद्ध है– "राजस्थान में जहाँ वर्षा कम होती है, वहाँ इस उत्सव को अधिक उल्लास से मनाया जाता है, क्योंकि शुष्क भूमि में थोड़ी भी आभा हृदयाकर्षक लगती है। राजस्थान में काली घटा जोड़कर इसका नाम भी लोगों ने कजली तीज कर दिया है।"9कजली तीज को बड़ी तीज या सातुड़ी तीज भी कहते हैं जो श्रावण में नहीं अपितु भाद्रपद कृष्ण तृतीया को मनायी जाती है। महिला प्रधान त्योहार होने से यह त्योहार भी ग्रामीण व शहरी महिलाओं द्वारा जानने के स्तर तक हर्षोल्लास से मनाया जाता है।

गणगौर– गीतों के त्योहार रूप में मनाए जाने वाला गणगौर उत्सव राजस्थान में तीज के समान ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है। राजस्थान के सदर्भ में यह कहावत सदियों से प्रचलित रही है कि 'तीज त्योहांरा बावड़ी, ले डूबी गणगौर" अर्थात् राजस्थान में उत्सवों, त्योहारों पर्वों व मेलों का शुभारम्भ तीज के त्योहार से तथा समापन गणगौर के त्योहार से माना जाता है "वस्तुतः गणगौर का पूजन महिलाओं का ही एक प्रमुख व्रत अथवा त्योहार है। उस पर्व के अवसर पर दो अलग–अलग गौरों के नाम पर पूजन किया जाता है। पहली 'घुड़ला गौर' कहती है जबकि दूसरी गौर को धीगांगौर कहते है।"10 यूं तो राजस्थान के नाथद्वारा, राजसमंद की गुलाबी गणगौर जो चैत्र शुक्ल पंचमी को मनायी जाती है। बिना ईसर की गणगौर, जैसलमेर में चैत्र शुक्ल चतुर्थी को मनायी जाती है। 'लकड़ी की गणगौर' बस्सी (चितोड़) की प्रसिद्ध है। धींगा गणगौर जोधपुर व उदयपुर में प्रसिद्ध है। किन्तु जयपुर की गणगौर व सवारी विश्व प्रसिद्ध है। जयपुर ग्रामीण व शहरी महिलाएँ अनगिनत रस्मों रिवाजों का निर्वाह करते हुए गणगौर उत्सव को बड़े ही हर्षोल्लास से मनाती है। जयपुर में स्वयं के निजी आवास पर सर्वप्रथम गौरी व ईसर की पूजा विधि विधान से जयपुर राजवंश के राजा द्वारा पूरे परिवार के साथ सर्वप्रथम की जाती है जिसका पालन वर्तमान समय में भी हो रहा है। राजवंश के पूजा–अर्चना के पश्चात् गणगौर की सवारी बड़े ही धूम–धाम से जयपुर शहर में निकाली जाती है जिसमें महिलाएँ–पुरूष दोनों ही रंगारंग प्रस्तुति देते हुए, रंग–बिरंगें व सुसज्जित परिधानों में बड़े आकर्षक लगते हैं– "हकीकत बहियों स प्रमाणित होता है कि इस उत्सव को जोधपुर, जयपुर, उदयपुर, कोटा, बीकानेर आदि राज्यों में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है जिसमें स्वयं राज्यों के राजा तथा कर्मचारी सवारी के साथ सम्मिलित होते थे।"11 यह त्योहार न केवल राजस्थान के निवासी अपितु सम्पूर्ण भारत तथा विदेशी सैलानी भी देखने हेतु आते हैं।महिलाओं द्वारा घूमर, कालबेलियाँ नृत्य आदि किया जाता है। इसके अलावा शहरों की महिलाएँ परम्परागत रीति–रिवाजों का पालन करते हुए सोलह दिन पूजा कर लेती है, वहीं कामकाजी महिलाएँ सोलहवें दिन ही पूजा करती है, व्रत रखती है।

वही शहरों में महिलाएँ गणगौर के मेले का लुप्त भी यदा–कदा उठा पाती है क्योंकि गणगौर की सवारी जयपुर में जब निकलती है तो यहाँ व्यापक स्तर पर भीड़ होती है। बीच में गणगौर की प्रतिमा रखी पालकी को पुरुष कंधे पर उठाए हुए चलते हैं। सवारी के आगे–पीछे कलाकार नाट्य रूपान्तरण करते, महिला कलाकार नृत्य करते व गीत गाते, नट–भाट/भाण्ड स्वांग रचते हुए अलग–अलग कलाओं का प्रदर्शन करते नजर आते हैं। वही ग्रामीण क्षेत्र में यह त्योहार महिलाएँ होलिका दहन के दूसरे दिन से शुरू कर देती है जो लगातार सोलहवें दिन तक उमंग व उत्साह के साथ चलता रहता है। विवाह के पश्चात् लड़की के ससुराल से तीज की भांति विवाहित सिंजारे आते हैं उसमें सभी श्रृंगारित वस्तुए, मिठाइयाँ, फल, आभूषण होते हैं जो विवाहित लड़की के अमर सुहाग की प्रतिकृति माने जाते हैं। हालांकि शहरी स्तर पर भी महिलाओं व विवाहित कन्याओं के द्वारा सिंजारे का त्योहार मनाया जाता है। सोलह दिन तक विवाहित व कुँवारी कन्याएँ कुमकुम, काजल व मेहन्दी से दीवार पर सोलह–सोलह बिन्दी लगाते हुए होली की राख से बनायी हुई पींडियों की पानी व दूब से रोज सुबह–सुबह गीत गाते हुए पूजा करती है व शाम को चीनी से मुँह मीठा करवा कर गीत व बधावा गीत गाते हुए सुनती है। शहर में भी यदा–कदा ऐसा समा देखने को मिल जाता है किन्तु शहरी महिलाएँ व लड़कियाँ ग्रामीण परिवेश की परम्पराओं से आंशिक रूप से ही सरोकार रख पाती है। आठ दिन तक रोज सुबह जल्दी उठकर अपने–अपने लोटों या छोटे घड़ों में दूर–दूर खेतों, पोखरों से पानी लाती है और दूब–फूल से अपने घड़ों को सजा कर गीत गाते हुए आती है और पूजा करती है। गौर की पूजा करने के बाद बचे हुए पानी को घूमर करते हए जमीन पर गोल घेरा बनाती है। इसी दिन गणगौर के आठवें दिन घुड़ला अष्टमी व शीतलाष्टमी का त्योहार मनाया जाता है। इस दिन गाँवों में छोटी बच्चियों को ईसर–गौर बना कर पूरे गाँव मेंबड़े ही चाव से बैंड–बाजे या डी.जे. से निकाला जाता है। ईसर–गौर बनी बच्चियाँ सभी घरों में जाकर आर्शीवाद लेती है। इस तरह से आगे के आठ दिन भी हँसी–खुशी व उल्लास के साथ गौर की पूजा करते हुए निकल जाती है। गणगौर के आठवें दिन ही शीलताष्टमी को कुम्हार के घर जाकर पक्की गणगौर लेकर आती है फिर उनकी पूजा करते हुए गणगौर के मेले के दिन उन्हें कुएँ में डालकर आ जाती है। सदियों से यही परम्परा रही है कि सोलह दिन की गणगौर का त्योहार राजस्थान की महिलाओं के जीवन का प्रत्यक्ष अंग रहा है। गणगौर शिव–पार्वती का प्रतीक माना जाता है। इसलिए जयपुर की ग्रामीण–शहरी सभी महिलाएँ अपने पति की लम्बी उम्र के लिए यह व्रत व त्योहार बड़े ही हर्षोल्लास तथा आत्मविश्वास के साथ मनाती रही है "लोक मान्यता है कि पार्वती के मायके आने पर उसकी सखियों ने नाच–गाकर उसका स्वागत किया था। तब से गणगौर का त्योहार मनाया जाता है। गणगौर चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से शुरू होकर चैत्र शुक्ल तृतीया तक चलता है। गणगौर में गण शिव का और गौर पार्वती का प्रतीक है।"12ग्रामीण क्षेत्रों में गणगौर की सवारी पंचायत व प्रशासन के द्वारा ट्रेक्टर ट्रॉली या ऊँट गाड़ी के माध्यम से गाँव के मध्य ईसर–गौर की प्रतिमा रख कर मेले का आयोजन किया जाता है व दूसरे दिन पूरे गाँव में सवारी निकाली जाती है।

स्पष्टतः तीज व गणगौर का त्योहार महिला प्रधान होने से ग्रामीण व शहरी दोनो महिलाएँ ही मनाती आई है। जयपुर में शहरी स्तर पर महिलाएँ आंशिक रूप से तीज व गणगौर के त्योहार को परम्परागत रूप से उस स्तर तक नहीं मना पाती जिस स्तर पर ग्रामीण महिलाएँ मनाती आई है। इसके कई कारण हो सकते है। किन्तु जयपुर

में ही नहीं पूरे राजस्थान के ये दोनों त्योहार भारत व बाहरी देशों में अपना अलग व विशिष्ठ स्थान रखते है।हालांकि प्राकृतिक व सांस्कृतिक छवि युक्त इन त्योहारों में येन–केन–प्रकारेण विकृति आती जा रही है। आज ये त्योहार अपने मौलिक स्वरूप को खोते नजर आ रहे हैं। आवश्यकता है इन्हें संरक्षण प्रदान कर सुरक्षित करने की, जिसमें महिलाओं को स्वयं ही इन त्योहारों की ओर पूर्ण निष्ठा के साथ जागरूकता फैलाते हुए समय–समय पर अपना अतुलनीय योगदान पूर्व की भाँति हो देना होगा जिससे सांस्कृतिक परिवेश के इन त्योहारों को पुनः जीवित किया जा सके।

REFERENCES

1. संस्कृति की वसीयत– डॉ. अर्जुन सिंह शेखावत, पृ. 10–11.
2. राजस्थानः संस्कृति, कला एवं साहित्य– डॉ. प्रेमचन्द गोस्वामी, पृ. 127.
3. राजस्थान की आधुनिक कला और कला सर्जक– डॉ. आर.के. वशिष्ठ, पृ. 3.
4. वही, पृ. 6
5. राजस्थान का इतिहास, संस्कृति, परम्परा एवं विरासतः जैन व माली, पृ. 155.
6. राजस्थान का सामाजिक इतिहास– प्रकाश व्यास, पृ. 206.
7. Festivals, At the Jaipur Court – Vibhuti Sachdev, P. 53
8. राजस्थान का सांस्कृतिक प्रवाह– राजेन्द्र शंकर भट्ट, पृ. 92.
9. राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास– डॉ. गोपीनाथ शर्मा, पृ. 67.
10. राजस्थान के व्रत एवं उत्सव– डॉ. महेन्द्र सिंह नगर, पृ. 192
11. राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास– डॉ. गोपीनाथ शर्मा, पृ. 65
12. राजस्थान का इतिहास, संस्कृति, परम्परा एवं विरासत– जैन और माली, पृ. 321.